आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 16-06-2016 ● अंक- 557 ● तारीख - 17 जून 2016, ज्येष्ठ शुक्ल 12 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

सत्य साई अनमोल वचन

सत्य

प्रत्येक प्राणी में सत्य की एक चिनगारी है तथा उसके बिना कोई जीवित नहीं रह सकता। प्रेम की एक लौ हर व्यक्ति में है तथा इसके बिना एक अंधकारमय शून्य हो जाता है। वही चिनगारी, वही लौ परमेश्वर है, क्योंकि वही सर्व सत्य का तथा सर्व प्रेम का उद्गम स्थान है।

-श्री सत्य सांई बाबा

अनमोल वचन

प्रभु अपने हैं, यही भजन है। मेरा कुछ नहीं यही साधना है और मुझे कुछ नहीं चाहिए यही तपस्या है।

-पूज्य मोरारी बापू जी

किसी के साथ तुम वह मत करो, जो तुम अपने साथ नहीं होने देना चाहते हो। **-श्रद्धेय सुधांशु जी महाराज**

वह आदमी जरूर महा अज्ञानी है, जो ऐसे हर सवाल का जवाब दे जो कि उससे न पूछा जाए।

-स्वामी चिदानंद जी महाराज

दुःख भोगने से ही सुख के मूल्य का ज्ञान होता है।

-गीता मनीषि ज्ञानानन्द जी महाराज

यदि आप गलती करके स्वयं को सही सिद्ध करने का प्रयास करते हैं तो समय आपकी मूर्खता पर हँसेगा।

-स्वामी राजेन्द्रदास जी

सड़क दुर्घटनाओं को कम करने, सरकार ला रही मोटर वाहन कानून

परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने देश में बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि सरकार मोटर वाहन कानून और मजबूत बनाने के लिए विधेयक ला रही है, जिसमें सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के उपायों के सख्ती से पालन की व्यवस्था होगी। श्री गडकरी ने 'भारत सड़क दुर्घटनाएं-2015' नाम से यहां मंत्रालय की एक रिपोर्ट जारी करते हुए कहा कि विधेयक के मसौदे को तैयार करके जल्द ही मंत्रिमंडल के समक्ष रखा जाएगा और फिर मानसून सत्र में इसे संसद में पेश कर दिया जाएगा।

परिवहन मंत्रियों की कमेटी में राज्य दें सुझाव-विधेयक में राज्यों की मदद को आवश्यक बताते हुए उन्होंने कहा कि इसे ज्यादा कारगर बनाने के लिए इसमें सुझाव देने के वास्ते राजस्थान के परिवहन मंत्री यूनुस खान के नेतृत्व में राज्यों के परिवहन मंत्रियों की एक समिति बनायी गयी है और यह समिति जल्द ही अपनी अंतिम रिपोर्ट सौंप देगी।

सांसद, कलेक्टर मिलकर करें काम- केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के प्रयास में स्थानीय सांसद की अध्यक्षता में एक समिति बनायी जाएगी, जिसमें विधायक, पार्षद आदि के साथ ही जिला अधिकारी और जिले से जुड़े अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल होंगे। इसके अलावा एक समिति का भी सरकार ने गठन किया जो सड़क सुरक्षा के उपाय पर अपनी रिपोर्ट एक माह के भीतर उसे सौंपेगी।

धर्म का स्वरूप

आध्यात्मिक उन्नति के नियमों को आत्म सात करना जीवन का उद्देश्य है। अपनी संतानों को यह शिक्षा दीजिये कि सच्चा धर्म सदैव भावात्मक, रचनात्मक है। अशुभ एवं असत्य से बचे रहना ही धर्म नहीं है -पर वास्तव में शुभ एवं सत्कार्यों में निरंतर संलग्न रहना ही धर्म है। लोगों को उपदेश देने अथवा ग्रंथों का अध्ययन करने से सच्चे धर्म की प्राप्ति नहीं होगी। सच्चे धर्म की कसौटी तो पवित्र पुरुषार्थ से उत्पन्न आत्मा ही है। इस संसार में प्रत्येक नवजात शिशु अपने साथ पूर्वजन्मों का संचित अनुभव लेकर आता है और इस अनुभव की छाप हमें उसके मन एवं शरीर के निर्माण में दृष्टिगोचर होती है किंतु स्वाधीनता मुक्ति की वह भावना है, जो हम सभी लोगों में होती है और यह संकेत करती है कि हमारे अंतर शरीर और मन से परे भी कुछ और है। हमारी अंतर्यामी आत्मा स्वरूपतःस्वाधीन है औरे वही हमसे मुक्ति की इच्दा जागृत करती है। यदि हम ही बंधन में रहें तो हम विश्व में सुधार क्या करेंगे ? हमारा विश्वास है कि मानव-प्रगति मानव-आत्मा की क्रिया का परिणाम है। जगत जो कुछ है और हम जो कुछ हैं, यह सब आत्मा के मुक्त स्वरूप का ही प्रतिफल है।

हम उस एक ईश्वर में विश्वास रखते हैं, जो लोगों का पिता है, जो सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, जो अपनी संतान की रक्षा और पथ-प्रदर्शन असीम प्रेम से किया करता है।

ईसाइयों की तरह हम भी सगुण ईश्वर में विश्वास करते हैं, पर हम इसके और आगे भी जाते हैं हम विश्वास करते हैं कि हम वहीं हैं-उसी का व्यक्तित्व हममें अभिव्यक्त है, वह हम में है और हम उसमें है। हमारा विश्वास है कि समस्त धर्मों में सत्य के बीज हैं और इसीलिए हिंदू सबको वंदन करता है, क्योंकि इस संसार में सत्य किसी को तिरस्कृत कर देने में नहीं, बल्कि सबको अपनाने में है। हम परमात्मा को समस्त सम्प्रदायों के सर्वसुंदर फलों का गुलदस्ता अर्पित करेंगे। हम परमात्मा से भक्ति के लिए ही भक्ति करेंगे न कि पुरस्कारों की आशा से। हमें अपना कर्तव्य, कर्तव्य के लिए ही करना है, न कि पारितोषिक की आशा से। हमें सुंदर की उपासना करनी है, सुंदर के लिए ही न कि पारितोषिक की आशा से। इस तरह जब हमारा हृदय पवित्र हो जाएगा तब उस पवित्र हृदय में हमें परमात्मा के दर्शन होंगे। योग-यज्ञ, घुटने मोड़ना, अस्पष्ट शब्द उच्चारण करना अथवा बड़बड़ करना धर्म नहीं है, उनका तो महत्त्व तभी है, जब वे हममें पुरुषार्थपूर्ण सुंदर कर्म करने की प्रेरणा जागृत करें और हमारे विचारों को उन्नत बनाकर हमें दिव्य पूर्णता का ज्ञान करवा दें।

-स्वामी विवेकानन्द जी

साहस का कार्य

दान दुर्गति का नाश करता है। मनुष्य के हृदय को विशाल और विराट बनाता है। सोई हुई मानवता को जागृत करता है। हृदय में दया और प्रेम की गंगा बहा देता है। दान देने से संसार की कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं रहती। दान देने वाला सर्वत्र प्रेम और आदर का स्थान पाता है। उसके यश की सुगन्ध दसों दिशाओं में फैल जाती है। दान देना कोई साधारण कार्य नहीं है।

अपने संग्रह की हुई वस्तु को मुक्त मन से प्रसन्नता पूर्वक किसी को अर्पण कर देना वास्तव में एक बहुत बड़े साहस का काम है। जो मनुष्य निःस्वार्थ भाव से दान करते हैं और दान करने का अभिमान व उसकी चर्चा नहीं करते वे सचमुच देव स्वरूप हैं। वास्तव में जो देता है वह देवता है, और जो रखता है वह राक्षस है और याद रखना गौमाता को दिये गए दान से श्रेष्ठ कोई दूसरा दान नहीं है।

श्लोक-कठोपनिषद्

तं ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु
नीयमानसु श्रद्धा आविवेश सोऽमन्यत।

जिस समय दक्षिणा के लिए गौओं को ले जाया जा रहा था, तब छोटा बालक होते हुए भी उस नचिकेता में श्रद्धाभाव (ज्ञान-चेतना, सात्त्विक-भाव) उत्पन्न हो गया तथा उसने चिन्तन-मनन प्रारंभ कर दिया। नचिकेता में श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करने की पात्रता थी। व्याख्याः प्रकृति ने मनुष्य को चिन्तन मनन की शक्ति दी है, पशु को नहीं। मनन करने से ही वह मनुष्य होता है, अन्यथा मानव की आकृति में वह पशु ही होता है। चिन्तन के द्वारा ही मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान में प्रगति की है तथा चिन्तन के द्वारा ही मनुष्य उचित-अनुचित धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप आदि का निर्णय करता है। चिन्तन के द्वारा ही विवेक उत्पन्न होता है तथा वह स्मृति कल्पना आदि का सदुपयोग कर सकता है। चिन्तन को स्वस्थ दिशा देना श्रेष्ठ पुरुष का लक्षण होता है।

सच्चा त्याग

त्याग बुद्धिपूर्वक ही होना चाहिए। त्याग भी तन की तुलना में मन से ही अधिक होना चाहिए। 'सच्चा त्याग कबीर का जो दिल से दिया उतार'-जब तक त्याग मन से हो, तो त्याग का महत्त्व ही नहीं। कितने ही लोग जन्माष्टमी के दिन उपवास तो करते हैं किन्तु स्मरण, परमात्मा के अतिरिक्त किसी और का करते हैं। उपवास के दिन परमात्मा का स्मरण करते-करते सेवा में इतना तन्मय हो जाय कि भूख-प्यास न लगे तो समझिये कि वह सच्चा उपवास है। 'उप' शब्द का अर्थ है समीप में तथा 'वास' का अर्थ है रहना। मन से प्रभु के चरणों में रहने को ही उपवास कहते हैं। सोचिए, किसी वस्तु के न खाने को उपवास कहते हैं क्या ? ऐसा उपवास को साधारण उपवास है, देह का उपवास है। सच्चा उपवास तो मन से ही होता है।

गोपी भगवान से कहती हैं -'अतिविलंघ्य-संसार के सम्बन्ध तुच्छ हैं, दुःखरूप हैं। संसार-सुख से तो हम मन से ऊब गयी हैं, उकता चुकी हैं और इसीलिए पति-पुत्र सभी का हमने मन से त्याग कर दिया है और आपके श्री चरणों में हम उपस्थित हो गयी हैं।

जीव जब परमात्मा के लिये लौकिक सुखों का त्याग कर देता है, तभी भगवान् को उस पर थोड़ी दया आती है। संसार के सभी सुखों का भोग करे और थोड़ा-सा प्रभु-स्मरण व प्रभु-सेवा करे तो इस प्रकार ठाकुर जी बहुत प्रसन्न नहीं होते। परमात्मा के लिए संसार के सभी सुखों का मन से ही त्याग करे, तभी यह जीव परमात्मा को प्रिय लगता है।

घर में कोई दुःख आ जाय या कोई अड़चन उपस्थित हो जाय तो लोग मनौती मानते हैं कि मैं दूध नहीं लूँगा या मैं घी नहीं खाऊँगा। ऐसी मनौती वे स्वार्थ के लिये ही मानते हैं किन्तु परमात्मा के लिए वे कोई मनौती नहीं मानते। वे ऐसा नहीं कहते कि जब तक मुझे श्रीकृष्ण के दर्शन नहीं होंगे, तब तक मैं मिठाई नहीं खाऊँगा।

गोपी भगवान् से कहती है -'हमने तो आपके लिये मन से सभी चीजों का त्याग कर दिया है। आपके बिना हमें सब कुछ तुच्छ लगता है। नाथ ! हम जो कुछ कह रही हैं, यह सत्य है या असत्य, वह आप जानते हैं। आप गतिविद् हैं, अन्तर्यामी हैं।'

श्रीकृष्णका अन्तर्यामी स्वरूप सबके भीतर स्थित है। किसी के मन में कोई भाव जागे तो उसका पता ठाकुरजी को लग जाता है। मन से भी अगर कोई पाप कर रहा हो तो श्रीकृष्ण उसे भी जान जाते हैं। जो मनका भी साक्षी है, वही तो ईश्वर है।

गोपी भगवान् से कहती है-'आप अन्तःसाक्षी हैं। जैसे आप बाहर विराजमान हैं, वैसे ही प्रत्येक जीव के अन्तर में अन्तर्यामी रूप से भी आप विराजमान हैं। आप गतिविद् हैं। हमारी गति आप अच्छी तरह जानते हैं। आप से कुछ भी छिपा नहीं है। आप सर्वज्ञ हैं। नाथ! आपने वंशी बजाकर हमें बुलाया है। हम बुद्धिपूर्वक सर्वस्व का त्यागकर आपके लिए छोड़ी आई हैं और अब आप हमारा त्याग कर रहे हो, यह उचित नहीं है।

सत्य के मार्ग पर चलें

अगर आप दुनिया की भीड़ से बचना चाहते हो तो बस एक काम करना, सच्चाई के रास्ते पर चलना शुरू कर देना। यहाँ बहुत कम भीड़ है और इस रास्ते पर चलने के लिए हर कोई तैयार नहीं होता। यद्यपि व्यर्थ के लोगों से बचने के और भी कई तरीके हैं मगर सत्य पर चलने से व्यर्थ अपने आप छूट जाता है और श्रेष्ठ प्राप्त हो जाता है। गलत दिशा की ओर हजारों कदम चलने की अपेक्षा लक्ष्य की ओर चार कदम चलना कई गुना महत्वपूर्ण है। तुम सत्य को जितना जल्दी हो चुन लो ताकि परम सत्य भी तुम्हें चुन सके। सत्य के मार्ग पर चलना ही सबसे बड़ा साहसिक कार्य है। सत्य के मार्ग पर चलने से ही सृजन होता है। सत्य के मार्ग पर चलने से ही आत्मा का कल्याण होता है। हो सकता है सत्य से सत्ता ना मिले पर सच्चिनानंद अवश्य मिल जाता है।

-श्रद्धेय संजीव कृष्ण ठाकुर जी

भगवान् हर जगह हैं

एक शिष्य ने अपने गुरु से पूछा -"आप कहते हैं कि भगवान् हर जगह हैं मुझे तो कहीं दिखाई नहीं पड़ते ?"

गुरु ने पानी माँगा। नमक का एक ढ़ेला भी मँगाया। गुरू ने कहा -"इस ढेले को पानी में डाल दो।"

शिष्य ने वैसा ही किया।

गुरु ने कहा -"ऊपर का पानी चखो। कैसा है ?"

शिष्य ने उत्तर दिया -"नमकीन।"

गुरु बोले-"अब बीच का पानी चखो। बताओ, कैसा है ?"

शिष्य ने कहा -"नमकीन।"

गुरु ने फिर कहा -"अब नीचे का पानी चखो।"

शिष्य ने चखा और कहा-"यह भी नमकीन है।"

तब गुरु ने समझाया-पानी में नमक नहीं दिखता, लेकिन वह पानी में हर जगह-ऊपर, नीचे, बीच में -व्याप्त है।

किसी बात के सच होने के लिये उसका आँखों से दिखाई पड़ना जरूरी नहीं होता। कभी-कभी अन्दर से मिलने वाले अनुभव से भी हमें बातों के सच का पता चलता है (जिस प्रकार पानी को चखने के अनुभव से पानी में नमकीन होने की सच्चाई का पता चला) भगवान् को हमने देखा नहीं ; परन्तु ऋषि-मुनियों ने अंदर के अनुभव से यह जाना है कि भगवान् कण-कण में हैं।

सबसे अनमोल

महामंत्री के पद पर नियुक्ति हेतु राजा ने अपने सभी मंत्रियों को अपने राज्य में से सबसे कीमती वस्तु लाने को कहा। कोई हीरे तो कोई जवाहरात लेकर लौटा। उनमें से एक सिर्फ मिट्टी लेकर लौटा। पूछने पर वह बोला - "राजन् ! ये अपने राज्य की मिट्टी है। मेरे लिए तो यही सबसे बहुमूल्य है और इसकी सेवा का अवसर मेरे लिए सर्वोच्य सौभाग्य है।" राजा ने उसे महामंत्री का पद प्रदान कर दिया।

मानव मन के बोल

सेवा के शुरूआती साथी

गतांक से आगे.....

जैसे शरणानन्द जी महाराज की छोटी लकड़ी यमुना नदी में गिर गई और जैसे ही गिरी हुई लकड़ी ढूँढने लगे, शरणानन्द जी के अन्तर्मन के भगवान बोले-बस शरणानन्द, इतना ही भगवान पर भरोसा है, एक छोटी-सी लकड़ी के लिये व्याकुल हो रहा है। हाथ - पाँव ढीले छोड़ दिये और ढीले हाथ में सहज भाव से एक बड़ी लकड़ी आकर लग गई, बाहर आये, फिर यमुना नदी के किनारे शिवजी महाराज के दर्शन करने जा रहे है; बिहारी भगवान के।

तो मैं आपको निवेदन कर रहा था, पाँच हजार रूपये का ड्राफ्ट आया। अब बाकी के 4500/- रूपये कहाँ से लाने है? सोचा पाँच सौ रूपये तो किसी से उधार ले लेंगे, अब बचे 4000 रूपये। जिन्दगी में प्रथम बार राजमल जी भाई साहब से, पाँच-चार साल तक उनके पास जाता रहा, प्रथम बार बहुत संकोच के साथ मैंने कहा - भाई साहब कुछ जरूरत थी, यदि चार हजार रूपये मुझे ब्याज पर मिल जावें तो मैं आपको छः महीने में लौटा दूँगा। मैंने कहा और मेरी आँखे नीचे हो गई। भाई साहब ने ना कुछ कहा, ना कुछ बोला, ना ये कहा कि हाँ मैं दे दूँगा, ना कहा कि नहीं दूंगा। मैं भी चुप, वो भी चुप और कैम्प की बातें चलने लग गई। अगले केम्प की तैयारी करने लगे। नेत्र केम्प की। घण्टे भर बाद-चलो-चलो कैलाश जी, भोजन करके आते हैं।

उनके घर पर ही भोजन करने जाया करते थे। उस समय कहीं बीसलपुर हॉस्पीटल भी नहीं बना, हाथ धोये बिठाया भोजन करने के लिये। एक दूसरे कमरे में गये, 4000 रूपये राजमल जी भाई साहब लाये और मेरे हाथ में दे दिये। उस समय भी वो कुछ नहीं बोले, मैंने कहा-भाई साहब, आपको धन्यवाद, मैं ब्याज सहित लौटा दूँगा, तब भी कुछ नहीं बोले। जब छः महीने बाद मैंने ब्याज देने की कोशिश की तो उनकी आँखों में आँसू आ गये। बोले-कैलाश जी, आप तो मेरे इतने प्रिय हो, जिन्दगी में पहली बार आपने चार हजार रूपये उधार माँगे मेरे से, बाकी तो आप अपने खर्चे से ही उदयपुर से बीसलपुर आते हो, सिरोही से बीसलपुर आते हो।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

प्रत्येक मनुष्य में एक अलौकिक गोपनीय शक्ति होती है, पर इसकी सहज कल्पना न तो स्वयं वह इन्सान कर पाता है और न ही कोई और। वास्तव में हर इंसान इस बात को महसूस करता है कि उसमें कुछ आंतरिक शक्ति छिपी हुई है, पर कठिनाई यह है कि वह इस आंतरिक शक्ति का उपयोग कैसे करे? किस समय करें? और कहाँ करें? इस बात को कोई नहीं जानता, अतः इनका उचित अवसर पर लाभ न उठा पाने के कारण उन आंतरिक शक्ति की पहचान कभी नहीं हो पाती।

हीरा जब जमीन से निकलता है तो उसे हीरा कह पाना या हीरे के रूप में पहचान पाना हर मानव के लिए संभव नहीं होता। मगर जब उसे तराश कर उस पर पॉलिश कर दी जाती है तो उसे लोग अपने आप पहचान लेते हैं, तभी उसका मूल्य आंका जाता है। उसी प्रकार जब तक मनुष्य के गुणों को तराशा नहीं जाता, उन पर पॉलिश नहीं की जाती तब तक उसका मूल्य नहीं बढ़ सकता।

इस दुनिया का कोई भी कार्य चाहे व कितना भी ऊँचा महान व कठिन ही क्यों न हो, सभी मनुष्य द्वारा सम्पन्न किए जाते है। एक नन्हे बीज से विशाल वृक्ष जैसी वस्तु का निर्माण होता है, इसकी क्या कल्पना भी की जा सकती है ? एक अत्यंत सूक्ष्म अणु महाविनाश कर सकता है। इसी प्रकार हमारे शरीर की सूक्ष्म शक्ति, हमारा एक छोटा सा विचार भी, कितनी शक्ति रखता है– इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हम इस बात को कदापि न भूलें कि हमारी शक्ति से सैकड़ों गुणा शक्ति हमारे अंतःकरण में विद्यमान है। हम अपने जीवन का ध्रुवतारा निश्चित कर लें। हमारा निश्चय हमको चुम्बक के समान खींचेगा। ऊंची इच्छा, आत्मा की पहचान, प्रबल क्षमता, तन्मयता यही हमारे गुण होने चाहिए। जब उन गुणों के साथ हम किसी कार्य को करेंगे, तो निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। हमारे अन्दर यह सब गुण हैं, बशर्ते कि हम उन्हें पहचानें।

सदा हम अपने विकास के अवसर खोजते रहें – जब भी हमें अवसर मिले, सीखने की कोशिश करें, समय का लाभ उठायें। अपनी आत्मा को अपना शिक्षक मानें। उसके निर्देशन में कार्य करे। अपनी राह बनाएँ इसी में आपका कल्याण है। किसी भी भय, चिन्ता, लोभ आदि से अपने कदमों को न रोकें। अविरल अपने मार्ग पर चलते रहें। नये से नया ज्ञान प्राप्त करना ही स्वयं में एक सफलता है।

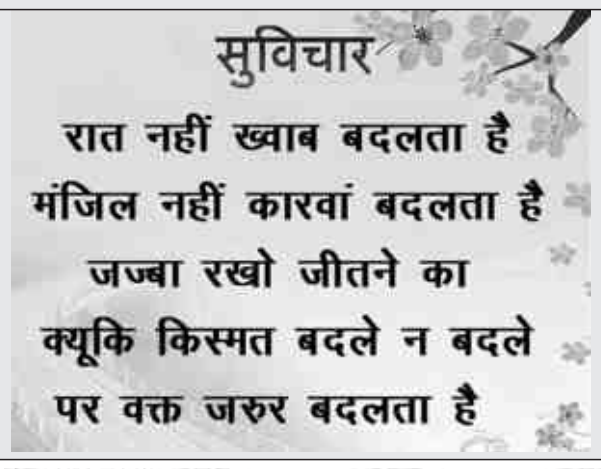

सत्य के मार्ग से ही सफलता : 'मानव'

'उदयपुर, नारायण सेवा संस्थान के बड़ी परिसर स्थित डिडवानिया हॉल में आयोजित त्रिदिवसीय भजन, सत्संग एवं 'मानव मन के बोल' के तीसरे दिन सत्संग में संस्थान संस्थापक आचार्य महामंडलेश्वर कैलाश 'मानव' ने नर सेवा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि यदि हम चाहते हैं कि वो नारायण हमसे प्रसन्न हो जाए और उसकी कृपा दृष्टि हम पर बनी रहे, तो हमें इस धरती पर दीन–दुःखियों की सेवा कर उन्हें सुकून देना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम जरूरतमंदों की वक्त पर सहायता करते हैं तो ही वो परमात्मा हमारे बुरे वक्त में हमें याद करते हैं। हम पर दया करते हैं। हम अपनी अच्छाईयों से इस दुनिया को और बेहतर बनाने का प्रयास करें।

संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि देशभर से आए हुए उपचाराधीन दिव्यांग बंधुओं और उनके परिजनों ने सत्संग का आनंद लिया तथा संस्थान की उत्तम सेवाओं के विषय में अपने विचार सांझा किए। कार्यक्रम में भजन मण्डली ने समधुर भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन कृपा व्यास ने किया।

सुन्दर कांड का पाठ करने से बनी रहती है हनुमानजी की कृपा

जब भी किसी व्यक्ति के जीवन में ज्यादा परेशानियां हों, कोई काम नहीं बन रहा हो, आत्मविश्वास की कमी हो या कोई और समस्या हो तो सुंदरकांड का पाठ करने से सारी समस्याओं का समाधान खुद ही निकलने लगता है। कई बार विद्वान पंडित और ज्योतिष भी कष्टों का निवारण करने के लिए सुंदरकांड का पाठ करवाने की सलाह देते हैं।

श्रीरामचरितमानस के सुंदरकांड की कथा सबसे अलग है। संपूर्ण श्रीरामचरितमानस भगवान श्रीराम के गुणों और उनके पुरुषार्थ को दर्शाती है। सुंदरकांड एकमात्र ऐसा अध्याय है जो श्रीराम के भक्त हनुमान की विजय का अध्याय है। मनोवैज्ञानिक नजरिए से देखा जाए तो यह आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति बढ़ाने वाला कांड है। सुंदरकांड के पाठ से व्यक्ति को मानसिक शक्ति प्राप्त होती है। किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए आत्मविश्वास मिलता है।

हनुमानजी जो कि वानर कुल के थे, वे समुद्र को लांघकर लंका पहुंच गए और वहां माता सीता की खोज की। लंका को जलाया और सीताजी का संदेश लेकर श्रीराम के पास लौट आए। यह एक भक्त की जीत का पाठ है जो अपनी इच्छाशक्ति के बल पर इतना बड़ा चमत्कार कर सकता है। सुंदरकांड में जीवन की सफलता के महत्वपूर्ण सूत्र भी दिए गए हैं। इसलिए पूरी रामायण में सुंदरकांड को सबसे श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि यह व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ाता है। इसी वजह से सुंदरकांड का पाठ विशेष रूप से किया जाता है।

हनुमानजी की पूजा सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली मानी गई है। शास्त्रों में इनकी कृपा पाने के कई उपाय बताए गए हैं, इन्हीं उपायों में से एक उपाय सुंदरकांड का पाठ करना है। सुंदरकांड के पाठ से हनुमानजी के साथ ही श्रीराम की भी विशेष कृपा प्राप्त होती है। ऐसा माना जाता है की किसी भी प्रकार की परेशानी हो, सुंदरकांड के पाठ से दूर हो जाती है।

हनुमानजी के पूजन में इन बातों का ध्यान रखें

हनुमानजी के पूजन और दर्शन के लिए शास्त्रों के अनुसार कुछ नियम बताए गए हैं, पूजन और दर्शन करते समय इन नियमों का पालन चाहिए।

– हनुमानजी की तीन परिक्रमा करने का विधान है। भक्तों को इनकी तीन परिक्रमा ही करनी चाहिए।

– दोपहर के समय बजरंग बली को गुड़, घी, गेहूं के आटे से बनी रोटी का चूरमा अर्पित किया जा सकता है।

– हनुमानजी को शाम के समय फल जैसे आम, केले, अमरूद, सेवफल आदि का भोग लगाना चाहिए।

– सुंदरकांड का पाठ करते समय हनुमानजी को सिंदूर, चमेली का तेल और अन्य पूजन सामग्री भी अर्पित करना चाहिए।

सुविचार

रात नहीं ख्वाब बदलता है
मंजिल नहीं कारवां बदलता है
जज्बा रखो जीतने का
क्यूकि किस्मत बदले न बदले
पर वक्त जरुर बदलता है

अक्ल बड़ी या भैंस (कहावती कहानी)

एक गाँव में जब किसी लड़के की शादी हुई तो शादी के एक महीने के भीतर ही उस परिवार में भैंस ब्याई और उसने कटरा अर्थात् नर बच्चा दिया। आमतौर से मादा बच्चे की ज्यादा महत्ता होती है क्योंकि वह भैंस बनकर दुधारू पशु बन जाया करती है, जबकि भैंसे की कीमत नहीं होती। पुराने जमाने में ऐसी ही बातें भाग्य से जुड़ जाया करती थीं। बहू का आगमन समझा जाने लगा। जन्म के चार दिन बाद ही भैंस का बच्चा मर गया तो और मुसीबत पैदा हो गई। बच्चे का तो कुछ नहीं, भैंस ने दूध देना बंद कर दिया। वैसे बच्चा मरने पर सभी भैंसें दूध देना बंद नहीं करती, पर यह तो जिद्दी थी। अब वह दूसरे ब्यात पर ही दूध देगी। एक साल तक उसे चराए जाओ तो नुकसान पूरा है। अच्छी दुधारू भैंस का दूध सूख जाएगा। और तो जो था सो था ही, बेचारी बहू अब कुलक्षणी मानी जाने लगी। अड़ोस–पड़ोस की औरतों ने सास के कान भरने शुरू कर दिए। पर वह समझदार थी। कोई अनहोनी तो हुई नहीं थी। ये तो आम बात थी। भैंस का दूध निकालने की दो–तीन दिन कोशिश की गई पर वह सींग चलाकर घरवालों को भगा देती। घर की मालकिन को एक तरकीब सूझी। उसने दूसरी भैंस का बच्चा लाकर खड़ा किया। उसे भैंस ने सूँघा और सींग मारकर भगा दिया। खल–चूरी और दूसरा दाना दिया। भैंस खा तो गई पर दूध के नाम पर ठेंगा दिखा दिया।

बहू ने इस बात का अंदाजा लगाया कि जरूर वह भैंस अपने बच्चे की गंध पहचानती है। उसे और तरकीब सूझी कि अगर इसके बच्चे की खाल मिल जाए तो शायद मसला हल हो जाए। संयोग से खाल मिल गई। खैर चार डंडे जोड़कर फूँस लपेटा गया। इसे खलबच्चा अर्थात् खाल का बच्चा कहा गया। खलबच्चे को भैंस के पास लाकर रखा गया। जल्दी ही उसे अपने बच्चे की गंध आने लगी। भैंस ने एक–दो मिनट सूंघकर खलबच्चे को चाटना शुरू कर दिया। भैंस वैसे ही बड़ा जानवर है उसके साथ जबर्दस्ती तो नहीं की जा सकती, पर अब भैंस का रवैया बदल गया था।

भैंस को चुमकारा, सहलाया। वह बिदकी नहीं। खलबच्चा चाटने में मग्न हो गई। बहू झपटपट दूध निकालने का बर्तन ले आई और भैंस के थनों से धार गिरने लगी।

बहू ने आराम से दूध दुह लिया। पड़ोस की औरतें खड़ी तमाशा देख रही थी। उन्होंने खलबच्चा अब तक देखा ही नहीं था। वे इस मौके की तलाश में थी कि बहू की योजना विफल हो तो उसका मजाक बनाएँ, पर अब इनकी नहीं, बहू की सास की बारी थी। बोली–"खड़ी हुई टुकर–टुकर क्या देख रही हो ? तुम तो कहती थी, भैंस बड़ा जानवर है, उस पर काबू नहीं पा सकते। बहू ने दूध निकाल लिया। उसी भैंस से जो किसी को पास भी नहीं आने देती थी।" चुगलखारों की कच्ची हो गई। पर इससे भी बड़ी बात हुई कि लोगों को समझ में आ गया कि भैंस नहीं, अक्ल बड़ी होंती है। इसीलिए कहावत बन गई कि **अक्ल बड़ी या भैंस**।

मन का उत्सव

(मानव धर्म श्रृंखला का पंचम (5) पुष्प)

गतांक से आगे....

गुरूजी :– ये नर है, ये नारायण है ये दुखी भी अपने हैं, ये भाई भी मेरा अपना है। मैंने कहा – भैया आप के पैरों में घाव कैसे हो गये?आप के पैर कैसे कट गये?उन्होंने कहा – बाबूजी ट्रेन से एक्सीडेंट हो गया। चार दिन से मैं भूखा–प्यासा हूँ, मुझे बहुत पीड़ा है, मेरे पास दवाई के लिए पैसा नहीं है। मैंने कहा–आप भोजन कर लीजिए, मैं डॉक्टर के पास ले चलता हूँ। मुझे लगा कि मुझे मेरे रामजी मिल गये, मुझे मेरे ठाकुर जी मिल गये। लाला, मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में।

मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में।
तूं खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में।
तूं आह बन किसी की, मुझको पुकारता था।
मैं था तूझे बुलाता, संगीत के भवन में।
मेरे लिए खड़ा था .....

गुरूजीः–आप के लिए, आप के लिए, भाभीजी आप के लिए, मेरी माताजी आप के लिए ये दीन दुखी आए हैं, ये भगवान कृष्ण रूप में आए हैं। मुझे तो मेरे पूज्य पिताजी ने एक बार कहा था–एक सज्जन प्रतिदिन किसी एक महानुभाव को भोजन कराकर ही भोजन किया करते थे। एक दिन उन्होंने देखा, एक काले कपड़े में कोई तीन बजे जा रहा था बोले–बाबा भोजन करोगे? हाँ, कर लूंगा, उसे घर ले आये। उसने बूट भी नहीं खोले, उसने मानवधर्म की पालना नहीं की, उन्होंने हाथ भी नहीं धोए, उन्होंनें कुछ नहीं किया और फटा–फट, गटा–गट, फटा–फट, गटा–गट भोजन करने लगा। उस सज्जन को मन में थोड़ा अच्छा नहीं लगा, बोले–भैया हाथ तो धो लेते, भगवान को भोग तो लगा देते। वो बोले – मैं किसी भगवान को नहीं जानता, मैं किसी भगवान को नहीं मानता और भगवान का भी अपमान करने लगा। उस सज्जन ने कहा आप चले जाइए, मैं भगवान का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता। रात को भगवान ने स्वप्न में दर्शन दिए और कहा कि मैं तुझसे नाराज हूँ। मेरे भक्त को तूने भूखा उठा दिया। बोले–भगवान वो आपका भक्त नहीं था, वो तो आपको भी गाली–गलौच कर रहा था, वो आपका भी अपमान कर रहा था। अरे फिर भी मैंने उसको जिन्दगी भर खिलाया है, तूं एक दिन नहीं खिला पाया। भगवान जब ऑक्सीजन देते हैं तो कोई भेदभाव नहीं करते–बाबू। एक क्षण की हवा, हवा कभी नहीं पूछती कि आप किस जाति के हो?हवा नहीं पूछती कि आप माता हो या पिता हो, नर हो या नारी हो, छोटे हो या बड़े हो। हवा भगवान की दी हुई सभी के लिए अवेलेबल है।

मदन लाल जी मेरे पिता ने,
कहा मुझे चल टापू पर।
वहाँ बैठकर ध्यान करेंगे,
ध्यान वहाँ होगा ईश्वर का।
पता नहीं था ध्यान के कारण,
सत्य की शक्ति पायेंगे।
प्रतिदिन प्राणायाम से हमारी,
जीवन ज्योत जलायेंगे।

गुरूजी :– ध्यान, ध्यान, ध्यान। ये ढ़ाई अक्षर का शब्द बड़ा महत्वपूर्ण है–बाबूजी। जब हरिद्वार परमार्थ निकेतन आश्रम में पूज्य पिताजी कृपा करते थे, माताजी गीताजी का पाठ सुनाया करती थी, भजनानंद जी महाराज जब पाँच बजे प्रार्थना में उपदेश दिया करते थे, उस समय हम धन्य हो जाते थे। पिताजी ने कहा – चल बेटा, मेरी उँगुली पकड़। गंगा माता की कृपा हुई और गंगा माता के जल से मैं निहाल हो उठा और एक छोटे से टापू पर पिताजी बिराज गये, पलकों को बंद किया। कैलाश आओ ध्यान कर लें, आओ मानसिक ध्यान कर लें, अपने शरीर के अंगों को अंदर से देख लें आओ देखें हमारी ये जिह्वा, नौ हजार कलिकाओं की जिह्वा, ये छह रसों की जिह्वा ये कैसी है? ये शरीर की सबसे मजबूत माँसपेशी। इसका सदुपयोग करना इंसानियत का धर्म है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–रोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़